ग्रामाभ्युदयादेव देशाभ्युदयः
गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय
कृषि मौसम विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय
पन्तनगर–263145 उधम सिंह नगर (उत्तराखण्ड)
फोन नम्बरः 05944–233032

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा बुलेटिन, जनपद – नैनीताल

उपमहानिदेशक (कृषि मौसम विज्ञान), भारत मौसम विज्ञान विभाग, पुणे निदेशक, मौसम केन्द्र, देहरादून

वर्षः 27 अंकः 20 बुलेटिन अवधिः 10 – 14 मार्च, 2018 दिनः शुक्रवार दिनाँकः 09 मार्च, 2018

मौसम पूर्वानुमानः

भारत सरकार के **पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय** द्वारा वित्त पोषित एवं **भारत मौसम विज्ञान विभाग** द्वारा संचालित ग्रामीण कृषि मौसम सेवा परियोजना के अन्तर्गत **राष्ट्रीय मौसम पूर्वानुमान केन्द्र, भारत मौसम विज्ञान विभाग, मौसम भवन, नई दिल्ली** द्वारा पूर्वानुमानित तथा **मौसम केन्द्र, देहरादून** द्वारा संसोधित पूर्वानुमानित मध्यम अवधि मौसम आँकड़ों के आधार पर कृषि मौसम विज्ञान विभाग में स्थित कृषि मौसम विज्ञान प्रक्षेत्र इकाई (AMFU), गो0 ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्यो0 विश्वविद्यालय, पन्तनगर द्वारा **नैनीताल जिले के पर्वतीय क्षेत्रों में अगले पाँच दिनों** में निम्न मौसम रहने की संभावना व्यक्त की जाती है :–

पूर्वानुमानित मौसम तत्व	मौसम पूर्वानुमान–नैनीताल				
	10–03–2018	11–03–2018	12–03–2018	13–03–2018	14–03–2018
वर्षा (मिमी0)	0	0	0	0	0
अधिकतम तापमान (डिग्री से.ग्रे.)	20	19	19	20	20
न्यूनतम तापमान (डिग्री से.ग्रे.)	8	9	8	8	8
बादल आच्छादन	मध्यम बादल	आंशिक बादल	आंशिक बादल	आंशिक बादल	आंशिक बादल
अधिकतम सापेक्षित आर्द्रता (प्रतिशत)	80	80	80	80	80
न्यूनतम सापेक्षित आर्द्रता (प्रतिशत)	40	40	40	40	40
वायु की औसत गति (कि0मी0 प्रतिघंटा)	004	006	006	006	004
वायु की दिशा	उत्तर–पश्चिम	उत्तर–पश्चिम	पश्चिम–उत्तर–पश्चिम	पश्चिम–उत्तर–पश्चिम	पश्चिम–उत्तर–पश्चिम

भारत मौसम विज्ञान विभाग के नैनीताल स्थित मौसम विज्ञान वेधशाला (समुद्रतल से ऊँचाई–2084 मीटर) के प्रेक्षणानुसार विगत सात दिनों (2 से 8 मार्च 2018 सुबह 8:30 तक) में आसमान साफ रहने के साथ कही–कही मध्यम बादल छाये रहने व लगभग 0.8 मिमी0 वर्षा हुई तथा अधिकतम तापमान 14.0 से 21.6 डि0से0 एवं न्यूनतम तापमान 2.8 से 7.3 डि0से0 के बीच रहा। ऐसे अनुमानित मौसम में गो0 ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्यो0 विश्वविद्यालय, पन्तनगर के वैज्ञानिकों द्वारा इस क्षेत्र के कृषक भाइयों को सलाह दी जाती है कि इस मौसम में विभिन्न फसलों के लिए खेतों में निम्नानुसार कार्यक्रम अपनायें।

कृषि मौसम परामर्श

फसल प्रबन्धः

- गेहूँ की फसल में आवश्यकतानुसार सिंचाई करें तथा कीड़े एवं अन्य बीमारियों के प्रकोप हो रहा हो तो अनुमोदित कीटनाशियों का प्रयोग करें।
- मध्यम पर्वतीय क्षेत्रों में, मार्च–अप्रैल में सॉवा (मादिरा / झंगुरा) की प्रजातियों जैसे वी0एल0 मादिरा–172, वी0एल0 मादिरा–207 तथा पी0आर0जे01 की बुवाई पंक्ति से पंक्ति की दूरी 25से0मी0 एवं पौधे से पौधे की दूरी 10से0मी0 पर करें। जिसमें 8–10कि0ग्रा0 / है0 बीज उपयुक्त होगा। नत्रजन, फास्फोरस व पोटाश का 40:20:20 के अनुपात में

प्रयोग करें। जिसमें नत्रजन की आधी मात्रा एवं फास्फोरस तथा पोटाश की पूरी मात्रा का बुवाई के साथ प्रयोग करें। नत्रजन की शेष बची आधी मात्रा बुवाई के एक महीने बाद टॉप ड्रेसिंग के रूप में प्रयोग करें।

- ❖ झंगुरे की बुवाई के समय सड़ी हुई गोबर की खाद या कम्पोस्ट उपलब्ध हो तो 100 क्विंटल/है0 या 2 क्विंटल प्रति नाली की दर से खेत में अच्छी तरह मिला दें। यदि कम्पोस्ट उपलब्ध न हो तो वर्मीकम्पोस्ट 50 क्विंटल/है0 या 1 क्विंटल प्रति नाली की दर से प्रयोग करें।
- ❖ खरपतवार के नियंत्रण हेतु बुवाई के 20–25 दिन बाद 650ग्राम 2,4डी0 सोडियम साल्ट 500लीटर पानी में घोल बनाकर प्रति हैक्टेयर की दर से छिड़काव करें।
- ❖ सावा के बीज को कार्बेन्डाजिम 2 ग्राम/कि0ग्रा0 बीज की दर से बुवाई से पूर्व उपचारित करें।
- ❖ तराई क्षेत्रों में जहां तोरिया और सरसों की कटाई हो गयी हो तो उसमें गन्ने की बुवाई करें।
- ❖ गन्ने के टुकड़ों का बीज शोधन अवश्य करें। शोधन ऐगलाल या इमासान 6 के 0.25 प्रतिशत घोलमें 10 मिनट तक डुबाकर करें अथवा कार्बेन्डाजिम 15 डब्लू0पी0 के 0.1 प्रतिशत घोल में 10 मिनट तक डुबाकर करें।
- ❖ बसंतकालीन गन्ने की शीघ्र पकने वाली अनुमोदित प्रजातियों जैसे को0श0–8436, को0श0 88230, को0श0 96268, को0पंत 94211, को0जे0 85, को0 98014, को0श0 9525, को0श0 95436 का चुनाव अपने क्षेत्र के अनुसार बुवाई के समय करें।
- ❖ गन्ने की मध्यम एवं देर से पकने वाली प्रजातियों हेतु को0पंत 94222, को0श0 8432, को0पंत 84212, को0श0 11767, को0पंत 96219, को0पंत 90223, को0श0 97264, को0श0 96275, को0श0 99259, को0श0 96269 आदि प्रजातियों का चुनाव करें।
- ❖ प्रति हैक्टेयर बुवाई के लिए गन्ने के तीन आँख वाले 40–50 हजार टुकड़ों का प्रयोग करें।
- ❖ बसंतकालीन गन्ने के लिए 120 कि0ग्रा0 नत्रजन, 60 कि0ग्रा0 फासफोरस तथा 40 कि0ग्रा0 पोटाश का प्रयोग करें। नत्रजन की 1/3 मात्रा तथा फासफोरस व पोटाश की पूर्णमात्रा बुवाई के समय प्रयोग करें।
- ❖ गन्ने में खरपतवारों के नियंत्रण हेतु वैल्लोर के4 दवा की 2 कि0ग्रा0 मात्रा 750 लीटर पानी में घोल बनाकर बुवाई के 3 दिन के अंदर या 15 दिन के बांद प्रयोग करें।
- ❖ इस दवा के उपलब्ध न होने पर ऐट्राजीन की 4 कि0ग्रा0 मात्रा अथवा मैट्रीब्यूजीन की 2 कि0ग्रा0 मात्रा को 750 लीटर पानी में घोल बनाकर बुवाई के 3 दिन के अंदर प्रयोग करें।
- ❖ गेहूँ की फसल मे निचली पत्तियो पर पीले रंग के फफोले दिखाई देने पर या पत्तियो पर भूरे धब्बे या नोक से पत्तियो के पीले पड़कर मुरझाने पर प्रोपीकोनाजोल 25 ई0 सी0 का 1 लीटर/हैक्टेयर की दर से छिड़काव करें।

उद्यानप्रबन्धः

- ❖ कीड़ो एवं रोगों के निराकरण हेतु बगीचो मे फूल आते समय नियंत्रक दवाईयों का प्रयोग कतई न करें। इससे मधुमक्खियों के मरने का डर रहता है।
- ❖ बगीचो मे काट–छाट का काम पूरा कर लें।
- ❖ ऊँचें पर्वतीय क्षेत्रों में जहाँ पर बर्फ पिघल रही है नत्रजन खाद की प्रथम आधी मात्रा शीतोष्ण फल वृक्षो के थालों में प्रयोग करें।
- ❖ शीतोष्ण फल प्रजातियों के फल के बगीचों में फूल आने पर परागण हेतु मधुमक्खियों के बक्सों को लगभग 2–3/है0 की दर से रखें।
- ❖ ऊँचें पर्वतीय क्षेत्रों में सीमित सिंचाई वाले क्षेत्रों के लिए शिमलामिर्च, टमाटर, बैंगन एवं मिर्च बीजों की बुवाई पौधशाला में करें।
- ❖ मार्च के प्रथम पखवाड़े में फ्रासबीन की बुवाई करें।
- ❖ बीजू आलू कन्दों की सफाई कर मैन्कोजेब रसायन के 0.25 प्रतिशत के घोल में आधे घंटे तक उपचारण कर छाया में सुखायें तथा मार्च में बुवाई हेतु बीज सुरक्षित रखें।
- ❖ मटर में पौधों की सूखने एवं निचली पत्तियां पीले पड़ने की अवस्था में कार्बेन्डाजिम 1.0 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर जड़ों की सिंचाई करें ।
- ❖ प्याज और लहसुन की पत्तियॉ उपर से पीली पड़ने पर प्रोपीकोनाजोल या टेबूकोनाजोल का 1 मिली0 प्रति ली0 पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करे।
- ❖ टमाटर में पीलापन लिए हुए भूरे धब्बे दिखाई देने पर मैन्कोजेब 2.5 से 3.0 ग्राम प्रति लीटर की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।
- ❖ गोभीवर्गीय सब्जियो में पत्तीधब्बा रोग के नियत्रंण हेतु मैन्कोजेब का 2.5 ग्रा0 प्रति ली0 पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करे।

पशुपालनप्रबन्धः

- गर्भवती पशुओ में प्यूरपरल बुखार को रोकने के लिए, प्रतिदिन 50–60 ग्राम खनिज मिश्रण को पशुओं की प्रतिरक्षा को बढ़ाने हेतु आहार के रूप में दें।
- इस महीने में पानी से होने वाली बीमारी की रोकथाम के उपाय करें।
- पशुओं में मच्छरों, मक्खियों टिक्स आदि से होने वाली बीमारी के लिए सावधानी बरतें।
- इस समय पशुओं में बॉझपन और जोहन की बीमारी होने की अधिक संम्भावना है। इस स्थिति में पशुओ का तत्काल इलाज करवाए।
- पशुओं के बैठने का स्थान समतल होना चाहिए जिससे उनकी उत्पादन क्षमता प्रभावित न हो तथा इस समय नवजात पशुओं के रख–रखाव पर विशेष ध्यान दें।
- जानवरों में प्रसव दर को ध्यान में रखते हुए पशुशाला को अच्छी तरह साफ–सुथरा, सूखा, रोशनीदार, हवादार होना चाहिए। इसके लिए नालियों में तथा आस–पास सूखे चूने का छिड़काव करें तथा जानवर के नीचे सूखा चारा बिछा दें। प्रसव के उपरांत स्वच्छता का पूरा ध्यान रखें।
- भैंस के 1–4 माह के नवजात बच्चों की आहार नलिका में टाक्सो कैराविटूलूरम (केचुआँ/पटेरा) नामक परजीवी पाए जाते है। इसे पटेरा रोग भी कहते है। समय से उपचार न होने की दशा में लगभग 50 प्रतिशत से अधिक नवजात की मृत्यु इसी परजीवी के कारण होती है। इस रोग की पहचान–नवजात को बदबूदार दस्त होना और इस का रंग काली मिट्‌टी के समान होता है, कब्ज होना, पुनः बदबूदार दस्त होना व इसके साथ केचुआँ या पटेरा का होना, नवजात द्वारा मिट्‌टी खाना आदि लक्षणों के आधार पर इस रोग की पहचान कर सकते है। रोग की पहचान होते ही पीपराजीन नामक औषधी का प्रयोग कर सकते हैं।
- पटेरा रोग से बचाव हेतु प्रसव होने के 10 दिन पश्चात् 10–15 सी0सी0 नीम का तेल नवजात को पिला दें। तदुपरांत 10 दिन पश्चात् पुनः 10–15 सी0सी0 नीम का तेल पिला दें। बथुए का तेल इसका रामबाण इलाज है।

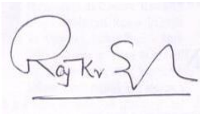

डा0 आर0 के0 सिंह

प्राध्यापक एवं प्रिंसिपल नोडल अधिकारी

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा,

गो. ब. पन्त कृषि एवं प्रौद्यो. विश्वविद्यालय, पन्तनगर